

भारतीय लोकतंत्र एवं मीडिया – समस्याएँ एवं समाधान

सोमनाथ पुरती

शोध छात्र

राजनीति विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखण्ड)

सार :

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जिसमें वर्तमान में 28 राज्य एवं 8 केंद्रशासित प्रदेश शामिल हैं। इतने विशाल एवं विविधतापूर्ण लोकतंत्र को लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप बनाए रखने में नागरिकों, संस्थाओं एवं विभिन्न लोकतांत्रिक एजेंसियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इस प्रक्रिया में मीडिया का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। लोकतंत्र के चौथे एवं सशक्त स्तंभ के रूप में भारतीय मीडिया ने देश में लोकतांत्रिक चेतना, पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व को बनाए रखने में पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाई है। प्रस्तुत अध्ययन भारतीय लोकतंत्र की वर्तमान स्थिति तथा इसमें मीडिया की भूमिका, गुणवत्ता, विश्वसनीयता, वैधता एवं उद्देश्यपरकता के संदर्भ में एक निष्पक्ष एवं विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदनों, विश्व रैंकिंग में भारतीय मीडिया की स्थिति तथा उपलब्ध साहित्य समीक्षा पर आधारित है। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में मीडिया की विश्वसनीयता में उल्लेखनीय गिरावट आई है। मुद्दों के चयन, समाचारों के प्रस्तुतीकरण, प्रायोजन, व्यावसायीकरण तथा पत्रकारिता मानकों के संदर्भ में मुख्यधारा मीडिया के प्रति विभिन्न प्रकार की धारणाएँ उभरी हैं। इसे राष्ट्रवाद, अंतरराष्ट्रीय एकाधिकार, राजनीतिक दलों के प्रभाव तथा टी.आर.पी.-केंद्रित दृष्टिकोण से जोड़कर देखा जाता है। साथ ही, हाल के वर्षों में सोशल मीडिया के तीव्र विस्तार तथा क्षेत्रीय मीडिया की बढ़ती भूमिका ने सूचना संप्रेषण के स्वरूप को नया आयाम प्रदान किया है। यह स्थिति लोकतंत्र के लिए अवसर एवं चुनौतियाँ—दोनों प्रस्तुत करती है, जिनके समाधान हेतु मीडिया की स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व एवं नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

कुँजी शब्द : लोकतंत्र, लोकतंत्र का चौथा स्तंभ, मीडिया, टी.आर.पी.

प्रकाशन समयरेखा:

मूल पाण्डुलिपि प्राप्त – 10 जनवरी, 2026; सहकर्मी समीक्षण पूर्ण – 16 जनवरी, 2026; संशोधित पाण्डुलिपि प्राप्त – 19 जनवरी, 2026; स्वीकृत एवं प्रकाशित – 26 जनवरी, 2026

अनुशंसित संदर्भ

पुरती, सो. (2026). भारतीय लोकतंत्र एवं मीडिया – समस्याएँ एवं समाधान. इंटेलिजेंटसिया इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 2(1), 34-40.

परिचय

भारत 15 अगस्त 1947 को एक लंबे ब्रिटिश उपनिवेशवाद से मुक्त होकर एक स्वतंत्र एवं लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश के समक्ष अनेक राजनीतिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक चुनौतियाँ उपस्थित थीं। इनमें सबसे प्रमुख चुनौती विशाल भू-भाग में विस्तृत विभिन्न रियासतों एवं क्षेत्रों को एक संगठित लोकतांत्रिक व्यवस्था के अंतर्गत लाना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निरंतर प्रयास किए गए, संविधान का निर्माण किया गया तथा 26 जनवरी 1950 को भारत एक संप्रभु गणराज्य के रूप में स्थापित हुआ। देश में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना एवं सुदृढीकरण के लिए विभिन्न संस्थागत पहलें की गईं, जिनमें मीडिया को एक स्वतंत्र एवं सशक्त स्तंभ के रूप में मान्यता प्रदान की गई। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान तथा स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, जिसे नज़रअंदाज़ करना संभव नहीं है। एक समय ऐसा था जब देश में कुछ सीमित समाचार पत्र, पत्रिकाएँ तथा दूरदर्शन जैसे सरकारी इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ही सूचना एवं समाचारों के प्रमुख स्रोत थे। उस काल में प्रकाशित समाचारों की विश्वसनीयता अत्यधिक मानी जाती थी और जनसामान्य का मीडिया पर गहरा विश्वास था। किंतु पिछले कुछ दशकों में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारणों से भारतीय मीडिया की भूमिका में परिवर्तन देखा गया है। वर्तमान में कई बार मीडिया को लोकतंत्र के प्रहरी के रूप में नहीं, बल्कि एक चुनौती के रूप में भी देखा जाने लगा है। इस संदर्भ में निरंतर अध्ययन किए गए हैं और किए जा रहे हैं। लोकतंत्र एवं मीडिया के परस्पर पूरक संबंधों का अध्ययन सदैव प्रासंगिक रहा है। अतः प्रस्तुत अध्ययन का मूल उद्देश्य समकालीन भारतीय परिप्रेक्ष्य में मीडिया की भूमिका को भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में समझना एवं उसका विश्लेषण करना है।

भारतीय लोकतंत्र

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जहाँ जनसंख्या के आधार पर यह विश्व में सर्वाधिक नागरिकों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जोड़ने वाला देश माना जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 26 जनवरी 1950 को भारत ने अपना संविधान लागू कर एक संप्रभु, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक गणराज्य का स्वरूप ग्रहण किया, जिसमें मौलिक अधिकारों, स्वतंत्र न्यायपालिका तथा संघीय व्यवस्था को विशेष महत्व दिया गया। भारतीय संविधान नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता, समानता का अधिकार तथा अन्य मूलभूत अधिकार प्रदान करता है, जिससे लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा सुनिश्चित होती है। भारत में संसदीय शासन प्रणाली अपनाई गई है, जिसमें राष्ट्रपति राष्ट्राध्यक्ष होते हैं तथा प्रधानमंत्री सरकार के प्रमुख के रूप में कार्य करते हैं। संसद द्विसदनीय है, जिसमें लोकसभा एवं राज्यसभा शामिल हैं। देश में पहला आम चुनाव 1951-52 में संपन्न हुआ था और तब से अब तक नियमित एवं व्यापक स्तर पर चुनाव आयोजित किए जाते रहे हैं। वयस्क मताधिकार के अंतर्गत 18 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक नागरिक को मतदान का अधिकार प्राप्त है, जो लोकतांत्रिक सहभागिता को मजबूत बनाता है। लोकसभा के 543 सदस्य प्रथम-पास्ट-द-पोस्ट प्रणाली के माध्यम से पाँच वर्षों के लिए चुने जाते हैं। भारत की संघीय संरचना केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों के संतुलित वितरण पर आधारित है, जिससे प्रशासनिक विकेंद्रीकरण को बढ़ावा मिलता है। साथ ही, बहुदलीय व्यवस्था देश में राजनीतिक विविधता और प्रतिस्पर्धा को सुदृढ करती है। यद्यपि संविधान नागरिक स्वतंत्रताओं की गारंटी देता है, फिर भी समय-समय पर मीडिया, पत्रकारों और गैर-सरकारी संगठनों पर दबाव की रिपोर्टें सामने आती रही हैं, जो लोकतंत्र के समक्ष एक चुनौती के रूप में देखी जाती हैं। वैश्विक लोकतंत्र सूचकांकों में भारत का प्रदर्शन मध्यम श्रेणी में रहा है, किंतु 1947 से अब तक निरंतर स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनावों का आयोजन इसकी लोकतांत्रिक परंपरा और संस्थागत मजबूती को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

यह कहना उचित नहीं होगा कि आज का भारतीय लोकतंत्र चुनौतियों से मुक्त है। वास्तव में, समकालीन भारत अनेक जटिल सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा है। सांप्रदायिक हिंसा, जातीय संघर्ष, आतंकवाद, राजनीति में नैतिक मूल्यों का निरंतर क्षरण, क्षेत्रीय असमानता, गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक एवं आर्थिक विषमता, सामाजिक बहिष्करण, हाशिए पर पड़े वर्गों की उपेक्षा, मीडिया की स्वतंत्रता पर बढ़ते दबाव तथा क्षेत्रवाद जैसी प्रवृत्तियाँ भारतीय लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर करने का प्रयास कर रही हैं। इसके अतिरिक्त, चुनावी राजनीति में धन और बाहुबल का प्रभाव, सत्ता के केंद्रीकरण की प्रवृत्ति, संस्थागत स्वायत्तता में कमी तथा जनहित के स्थान पर संकीर्ण राजनीतिक हितों को प्राथमिकता देना भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर चुनौती बनते जा रहे हैं। डिजिटल युग में सोशल मीडिया के माध्यम से फैलने वाली भ्रामक सूचनाएँ और नकारात्मक प्रचार भी लोकतांत्रिक संवाद को प्रभावित कर रहे हैं। इन सभी चुनौतियों के बावजूद भारतीय लोकतंत्र ने अब तक अपनी लचीलापन और स्थायित्व बनाए रखा है। किंतु यह तभी संभव होगा जब नागरिक समाज, मीडिया, न्यायपालिका तथा राजनीतिक नेतृत्व मिलकर पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और संवैधानिक मूल्यों की रक्षा हेतु निरंतर प्रयास करते रहें। इसमें मीडिया की निष्पक्ष भूमिका बहुत आवश्यक है।

लोकतंत्र की शुरुआत नागरिकों से होती है। वास्तव में, बिना जागरूक और सूचित नागरिकों के कोई भी लोकतंत्र वास्तविक रूप से सफल नहीं हो सकता। इसलिए सूचना और संचार लोकतंत्र के अनिवार्य तत्व हैं, और संचार का लोकतंत्रीकरण लोकतंत्र की पूर्वशर्त माना जाता है। आज के समय में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक दोनों प्रकार के मीडिया अत्यंत शक्तिशाली हो गए हैं, जिसके कारण समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियाँ भी कई गुना बढ़ गई हैं। भारतीय संविधान की प्रस्तावना सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, विश्वास और उपासना की स्वतंत्रता, अवसर की समानता तथा भाईचारे को बढ़ावा देने की बात करती है (पारिख एवं पहाड़, 2011)।

भारतीय मीडिया की वर्तमान स्थिति

भारतीय मीडिया विश्व का सबसे बड़ा और अत्यंत विविध मीडिया बाजार है, जिसमें प्रिंट, ब्रॉडकास्ट, डिजिटल तथा सोशल मीडिया शामिल हैं, और यह लोकतंत्र के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में कार्य करता है। भारतीय मीडिया की शुरुआत 1780 में प्रिंट माध्यम से हुई तथा 1927 में रेडियो प्रसारण आरंभ हुआ, जिसके बाद स्वतंत्रता के पश्चात इसका तीव्र विकास हुआ। BBC के एक रिपोर्ट की माने तो वर्तमान में भारत में लगभग 197 मिलियन टीवी घर हैं, करीब 900 निजी टीवी चैनल सक्रिय हैं तथा 1.4 अरब की आबादी के कारण इसकी पहुँच अत्यंत व्यापक है। विभिन्न अध्ययनों से यह बात सामने आती है कि यहाँ हजारों मीडिया संस्थान अनेक भाषाओं में कार्यरत हैं, जिससे इसकी विविधता स्पष्ट होती है, वहीं क्षेत्रीय और स्थानीय मीडिया भी मजबूत स्थिति में है। देश में 550 से अधिक एफएम रेडियो स्टेशन और 880 से अधिक सैटेलाइट टीवी चैनल कार्यरत हैं, जिनकी निगरानी सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय करता है। डिजिटल क्रांति और सस्ते इंटरनेट के कारण सोशल मीडिया आज समाचार का प्रमुख स्रोत बन गया है, हालांकि इसके साथ ही भ्रामक सूचनाओं की समस्या भी बढ़ी है। भारतीय मीडिया एवं मनोरंजन उद्योग का मूल्य FY24 में लगभग 2.5 लाख करोड़ रुपये आँका गया है और इसके निरंतर विकास की संभावना है। यद्यपि समाचार पत्र अब भी एक विश्वसनीय माध्यम बने हुए हैं, परंतु डिजिटल परिवर्तन के कारण प्रिंट मीडिया को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हाल के वर्षों में मीडिया की विश्वसनीयता और स्वतंत्रता पर भी प्रश्न उठे हैं, जिससे इसकी भूमिका और जिम्मेदारी और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

2025 में विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में भारत की स्थिति

रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (RSF) द्वारा जारी 2025 के वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में भारत को 180 देशों में 151वाँ स्थान प्राप्त हुआ है, जो 2024 में 159वें और 2023 में 161वें स्थान की तुलना में कुछ सुधार को दर्शाता है।

इसके बावजूद भारत को अब भी "बहुत गंभीर" श्रेणी में रखा गया है, जो देश में प्रेस स्वतंत्रता की चिंताजनक स्थिति को उजागर करता है। रिपोर्ट के अनुसार, मीडिया संस्थानों पर व्यावसायिक घरानों और राजनीतिक प्रभाव का बढ़ता नियंत्रण संपादकीय स्वतंत्रता को सीमित कर रहा है। साथ ही, आलोचनात्मक पत्रकारों के प्रति उत्पीड़न, धमकियाँ, "गोदी मीडिया" की प्रवृत्ति तथा नेतृत्व द्वारा नियमित प्रेस वार्ताओं की कमी जैसी परिस्थितियाँ भी मीडिया की निष्पक्षता को प्रभावित कर रही हैं (गुप्ता, 12 मई 2025)। क्षेत्रीय स्तर पर भारत नेपाल, मालदीव और श्रीलंका से पीछे है, जबकि पाकिस्तान और चीन से आगे है। यह स्थिति दर्शाती है कि भारत में मीडिया बहुलता और स्वतंत्र पत्रकारिता एक गंभीर संकट का सामना कर रही है, जिसे सुदृढ़ करने हेतु ठोस सुधारात्मक कदमों की आवश्यकता है।

भारत में मीडिया स्वामित्व: व्यापार, राजनीति और प्रभाव का गठजोड़

भारत में मीडिया विश्व के सबसे बड़े और विविध क्षेत्रों में से एक है, जिसमें टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और डिजिटल प्लेटफॉर्म शामिल हैं। हालांकि मीडिया संस्थानों की संख्या बहुत अधिक है, फिर भी समाचारों की विविधता और निष्पक्षता सीमित होती जा रही है। इसका मुख्य कारण मीडिया स्वामित्व का कुछ बड़े औद्योगिक घरानों और प्रभावशाली व्यक्तियों के हाथों में केंद्रित होना है। आज अधिकांश प्रमुख मीडिया समूह बड़े कॉर्पोरेट संस्थानों द्वारा नियंत्रित किए जाते हैं, जिनके व्यापारिक और राजनीतिक हित भी जुड़े होते हैं। उदाहरण के रूप में, एनडीटीवी का अधिग्रहण अडानी समूह द्वारा, नेटवर्क18 का रिलायंस इंडस्ट्रीज के अधीन होना, रिपब्लिक टीवी से जुड़े राजनीतिक संबंध तथा टाइम्स ग्रुप की व्यापक व्यावसायिक शक्ति को देखा जा सकता है (नेंसी, 1 सितंबर, 2022)। इस प्रकार मीडिया, व्यापार और राजनीति के बीच गहरा संबंध स्थापित हो गया है। मीडिया पर बढ़ते एकाधिकार का मुख्य कारण सख्त कानूनों और प्रभावी नियमन का अभाव है। क्रॉस-मीडिया स्वामित्व, पारदर्शिता की कमी और आत्म-नियमन की कमजोर व्यवस्था ने इस समस्या को और गंभीर बना दिया है। परिणामस्वरूप, समाचारों में पक्षपात, चयनात्मक रिपोर्टिंग और जनमत को प्रभावित करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। यह स्थिति लोकतंत्र के लिए घातक है। अतः आवश्यक है कि मीडिया को व्यावसायिक और राजनीतिक दबाव से मुक्त कर स्वतंत्र, निष्पक्ष और जनहित केंद्रित बनाया जाए, ताकि वह वास्तव में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की भूमिका निभा सके।

भारतीय मीडिया में सामग्री, प्रस्तुति, वैधता तथा विश्वसनीयता

भारतीय मीडिया में सामग्री, प्रस्तुति, वैधता तथा विश्वसनीयता लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व हैं। मीडिया की सामग्री का मुख्य उद्देश्य जनहित से जुड़े विषयों को निष्पक्ष और तथ्यात्मक रूप से प्रस्तुत करना होना चाहिए, किंतु वर्तमान समय में कई बार सनसनीखेज, विवादास्पद और टीआरपी-केंद्रित विषयों को प्राथमिकता दी जाती है। समाचारों की प्रस्तुति में आकर्षक शीर्षक, तेज बहस और भावनात्मक भाषा का प्रयोग बढ़ गया है, जिससे वास्तविक मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। वैधता के संदर्भ में यह आवश्यक है कि समाचार प्रमाणिक स्रोतों पर आधारित हों, परंतु कई बार अपुष्ट सूचनाएँ और अफवाहें भी प्रसारित कर दी जाती हैं। इससे मीडिया की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। यद्यपि अनेक प्रतिष्ठित संस्थान आज भी जिम्मेदार पत्रकारिता का पालन करते हैं, फिर भी समग्र रूप से भारतीय मीडिया को अपनी निष्पक्षता, सत्यनिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है, ताकि जनविश्वास बना रह सके।

सोशल मीडिया की बढ़ती भूमिका

भारत में सोशल मीडिया पिछले कुछ वर्षों में मुख्यधारा मीडिया के एक प्रभावी विकल्प के रूप में उभरा है। इंटरनेट और स्मार्टफोन की व्यापक उपलब्धता तथा सस्ते डेटा ने आम लोगों को सूचना प्राप्त करने और साझा करने का सशक्त माध्यम प्रदान किया है। फेसबुक, एक्स (ट्विटर), यूट्यूब, व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म आज समाचार, विचार और बहस के प्रमुख स्रोत बन गए हैं। लोग अब पारंपरिक समाचार पत्रों और टीवी चैनलों पर पूरी तरह निर्भर नहीं हैं, बल्कि सीधे सोशल मीडिया के माध्यम से घटनाओं की जानकारी प्राप्त करते हैं। इससे सूचना का लोकतंत्रीकरण हुआ है और आम नागरिकों की भागीदारी बढ़ी है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, विशेष रूप से सोशल नेटवर्किंग साइट्स, के बढ़ते प्रभाव के साथ विश्वसनीय और अविश्वसनीय सूचनाओं में अंतर करना आज के समय में अत्यंत आवश्यक हो गया है। इंटरनेट पर फैलने वाली अफवाहें और गलत जानकारियाँ व्यक्ति और समाज दोनों को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती हैं, जैसा कि विभिन्न सामाजिक और स्वास्थ्य संकटों के दौरान देखा गया है। इसलिए सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं के लिए यह जरूरी है कि वे प्राप्त होने वाली सूचनाओं की विश्वसनीयता के प्रति सजग रहें (जाधव एवं सरकाले, 2021)।

समस्या एवं समाधान

वर्तमान समय में भारतीय मीडिया और लोकतंत्र के समक्ष अनेक गंभीर चिंताएँ उभरकर सामने आई हैं। सबसे पहली चिंता मीडिया की निष्पक्षता और स्वतंत्रता में लगातार आती कमी है। राजनीतिक और व्यावसायिक दबावों के कारण कई बार समाचारों की प्रस्तुति पक्षपातपूर्ण हो जाती है। दूसरी प्रमुख चिंता मीडिया स्वामित्व का कुछ बड़े कॉर्पोरेट घरानों तक सीमित होना है, जिससे समाचारों की विविधता और वस्तुनिष्ठता प्रभावित होती है। तीसरी चिंता टीआरपी और व्यावसायिक लाभ को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति है, जिसके कारण जनहित से जुड़े गंभीर मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। चौथी चिंता सोशल मीडिया पर फैलने वाली फर्जी खबरें, अफवाहें और नफरत भरी सामग्री हैं, जो सामाजिक सौहार्द और लोकतांत्रिक संवाद को कमजोर करती हैं। इसके अतिरिक्त, पत्रकारों की सुरक्षा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर दबाव तथा मीडिया नैतिकता में गिरावट भी गंभीर समस्या बनती जा रही है।

यह मान्यता कि लोकतंत्र के लिए सक्रिय नागरिकों और जिम्मेदार मीडिया का होना आवश्यक है, ताकि लोग राजनीति में प्रभावी रूप से भाग ले सकें। ग्रेबर (2003) अपने एक अध्ययन में बताया कि न तो नागरिक और न ही मीडिया अपनी अपेक्षित भूमिका को पूरी तरह निभा पाते हैं। आधुनिक समाज में इन भूमिकाओं की प्रासंगिकता भी संदिग्ध है। मीडिया और लोकतंत्र से जुड़े कई मिथक वास्तविक स्थिति को छिपा देते हैं। इसके बावजूद लोकतंत्र का बने रहना यह दर्शाता है कि राजनीतिक संस्कृति अधिक महत्वपूर्ण है। संकट के समय नागरिक सक्रियता लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने में सहायक होती है। जेम्स क्यूरन (2023) ने अपने एक अध्ययन में बताया है कि उदारवादी विचारधारा के अनुसार मीडिया की सबसे बड़ी भूमिका सरकार पर निगरानी रखना और सत्ता के दुरुपयोग को उजागर करना है। इसे मीडिया का प्रहरी या "वॉचडॉग" कहा जाता है। माना जाता है कि यह भूमिका मीडिया की सभी अन्य भूमिकाओं से अधिक महत्वपूर्ण है। इसी आधार पर स्वतंत्र प्रेस और प्रसारण सुधार का समर्थन किया जाता है। हालांकि यह भूमिका आवश्यक है, लेकिन इसे सबसे ऊपर रखना व्यावहारिक नहीं है, क्योंकि निजी और सरकारी दोनों प्रकार के मीडिया पर विभिन्न दबाव होते हैं। एक सशक्त लोकतांत्रिक मीडिया व्यवस्था के लिए जरूरी है कि अलग-अलग सामाजिक वर्गों के लिए विशेष मंच हों, जहाँ वे अपने मुद्दों, विचारों और हितों पर खुलकर चर्चा कर सकें। रॉय (2013) भारत में मीडिया के तीव्र परिवर्तन के पीछे मुख्य रूप से दो प्रमुख कारण दिखाई देते हैं। पहला, नई तकनीकों की आंतरिक शक्ति, जिसने सरकारी नियंत्रण को चुनौती दी है और कई बार उसे दरकिनार भी किया है। डिजिटल मीडिया, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने सूचना के प्रवाह को तेज और व्यापक बना दिया है। दूसरा, भारत के लोकतंत्र की अव्यवस्थित, स्वतंत्र, रचनात्मक और ऊर्जावान प्रकृति है, जिसने मीडिया को अधिक सक्रिय और प्रभावशाली बनाया है। इन

दोनों के संयुक्त प्रभाव से भारत में एक सशक्त, स्वतंत्र और आक्रामक मीडिया का विकास हुआ है। साथ ही, ब्रिटेन की तरह भारत में भी अब यह बहस तेज हो गई है कि मीडिया पर कितना और किस प्रकार का नियमन होना चाहिए, या उसे पूरी तरह स्वतंत्र छोड़ देना उचित है।

भारतीय मीडिया से जुड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए एक संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। सबसे पहले मीडिया संस्थानों को अपनी संपादकीय स्वतंत्रता और नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता देनी होगी। सरकार को ऐसा नियामक ढाँचा विकसित करना चाहिए जो मीडिया की स्वतंत्रता को बनाए रखते हुए उसकी जवाबदेही भी सुनिश्चित करे। साथ ही, मीडिया स्वामित्व में पारदर्शिता और एकाधिकार पर नियंत्रण आवश्यक है। नागरिकों में मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देकर उन्हें सही और गलत सूचनाओं में अंतर करने में सक्षम बनाना भी जरूरी है। इसके अतिरिक्त, पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना, खोजी पत्रकारिता को प्रोत्साहित करना तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर जिम्मेदार आचरण को बढ़ावा देना समय की आवश्यकता है। इन्हीं प्रयासों के माध्यम से मीडिया को लोकतंत्र के सशक्त प्रहरी के रूप में पुनः स्थापित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय लोकतंत्र और मीडिया के बीच गहरा, जटिल एवं परस्पर निर्भर संबंध है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के साथ-साथ एक विशाल और विविध मीडिया व्यवस्था का भी प्रतिनिधित्व करता है। स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर वर्तमान समय तक मीडिया ने जनजागरूकता, सत्ता पर निगरानी तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किंतु हाल के वर्षों में मीडिया की निष्पक्षता, विश्वसनीयता और स्वतंत्रता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगे हैं। अध्ययन से यह तथ्य सामने आता है कि राजनीतिक हस्तक्षेप, कॉरपोरेट नियंत्रण, टीआरपी-प्रधान पत्रकारिता, पक्षपातपूर्ण प्रस्तुति, फर्जी समाचारों का प्रसार तथा सोशल मीडिया की अनियंत्रित भूमिका ने मीडिया की साख को प्रभावित किया है। इसके साथ ही, पत्रकारों की सुरक्षा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नैतिक मूल्यों में गिरावट भी लोकतंत्र के लिए चुनौती बनती जा रही है। विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में भारत की गिरती रैंकिंग इस स्थिति की गंभीरता को दर्शाती है। इसके बावजूद भारतीय लोकतंत्र ने अपनी जीवंतता और स्थायित्व बनाए रखा है, जिसका प्रमुख कारण नागरिक चेतना, राजनीतिक संस्कृति तथा संकट के समय जनसहभागिता है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि मीडिया की "वॉचडॉग" भूमिका आज भी प्रासंगिक है, किंतु उसे व्यापक सामाजिक उत्तरदायित्व, विविधता और समावेशन के साथ संतुलित करना आवश्यक है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय लोकतंत्र की मजबूती मीडिया की स्वतंत्रता, निष्पक्षता और उत्तरदायित्व पर निर्भर करती है। इसके लिए आवश्यक है कि मीडिया संस्थान नैतिक पत्रकारिता को प्राथमिकता दें, सरकार संतुलित नियमन व्यवस्था विकसित करे, मीडिया स्वामित्व में पारदर्शिता लाई जाए तथा नागरिकों में मीडिया साक्षरता को बढ़ावा दिया जाए। इन्हीं प्रयासों के माध्यम से मीडिया लोकतंत्र के सशक्त प्रहरी के रूप में अपनी भूमिका को पुनः प्रभावी ढंग से निभा सकता है और भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को और अधिक मजबूत बना सकता है।

संदर्भ सूची

1. नेंसी, के. (2022, सितंबर 1). हू ओन्स द मीडिया इन इंडिया? अ कनेक्शन ऑफ बिज़नेस, पॉलिटिक्स एंड मोर. मीडियम.
2. ग्रैबर, डी. (2003). द मीडिया एंड डेमोक्रेसी: बियाँड मिथ्स एंड स्टीरियोटाइप्स. एनुअल रिव्यू ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 6(1), 139-160.

3. क्यूरन, जे. (2023). रीथिंकिंग मीडिया एंड डेमोक्रेसी. इन द पॉलिटिकल कम्युनिकेशन रीडर (पृष्ठ संख्या – 27–31). रूटलेज.
4. रॉय, पी. (2013). मोर न्यूज़ इज़ गुड न्यूज़: डेमोक्रेसी एंड मीडिया इन इंडिया. इंडिया'ज़ मीडिया बूम: द गुड न्यूज़ एंड द बैड, 1–86.
5. पारिख, वी., एवं पहाड़, ए. (2011). अंडरस्टैंडिंग द इक्वेशन बिटवीन मीडिया एंड डेमोक्रेसी: अ केस स्टडी फ्रॉम इंडिया. मीडिया एशिया, 38(2), 78.
6. जाधव, एस., एवं सरकाले, एस. (2021). द रोल ऑफ सोशल मीडिया इन प्रमोटिंग डेमोक्रेटिक वैल्यूज़ इन इंडिया. इंटरप्रिटेशन, 921, 8.
7. बीबीसी न्यूज़. (2025, मार्च 10). इंडिया मीडिया गाइड.
8. गुप्ता, सी. (2025, मई 12). टॉप 10 बेस्ट एंड वर्स्ट कंट्रीज़ फॉर प्रेस फ्रीडम इन 2025: इंडिया'ज़ रैंक रिवील्ड. इंडिया टुडे.
